RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 May 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd May 2020

मासिक पत्रिका

अजायब ❁ बानी

वर्ष–अठारहवां | अंक–पहला | मई–2020

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हम परमात्मा को भूल गए हैं

5

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

आप कभी अकेले नहीं हैं

21

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भक्ति और प्यार

31

सतसंगों के कार्यक्रम की जानकारी

धन्य अजायब

34

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया**

96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी**

सहयोग – **परमजीत सिंह, ज्योति सरदाना**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 218 Website : www.ajaibbani.org

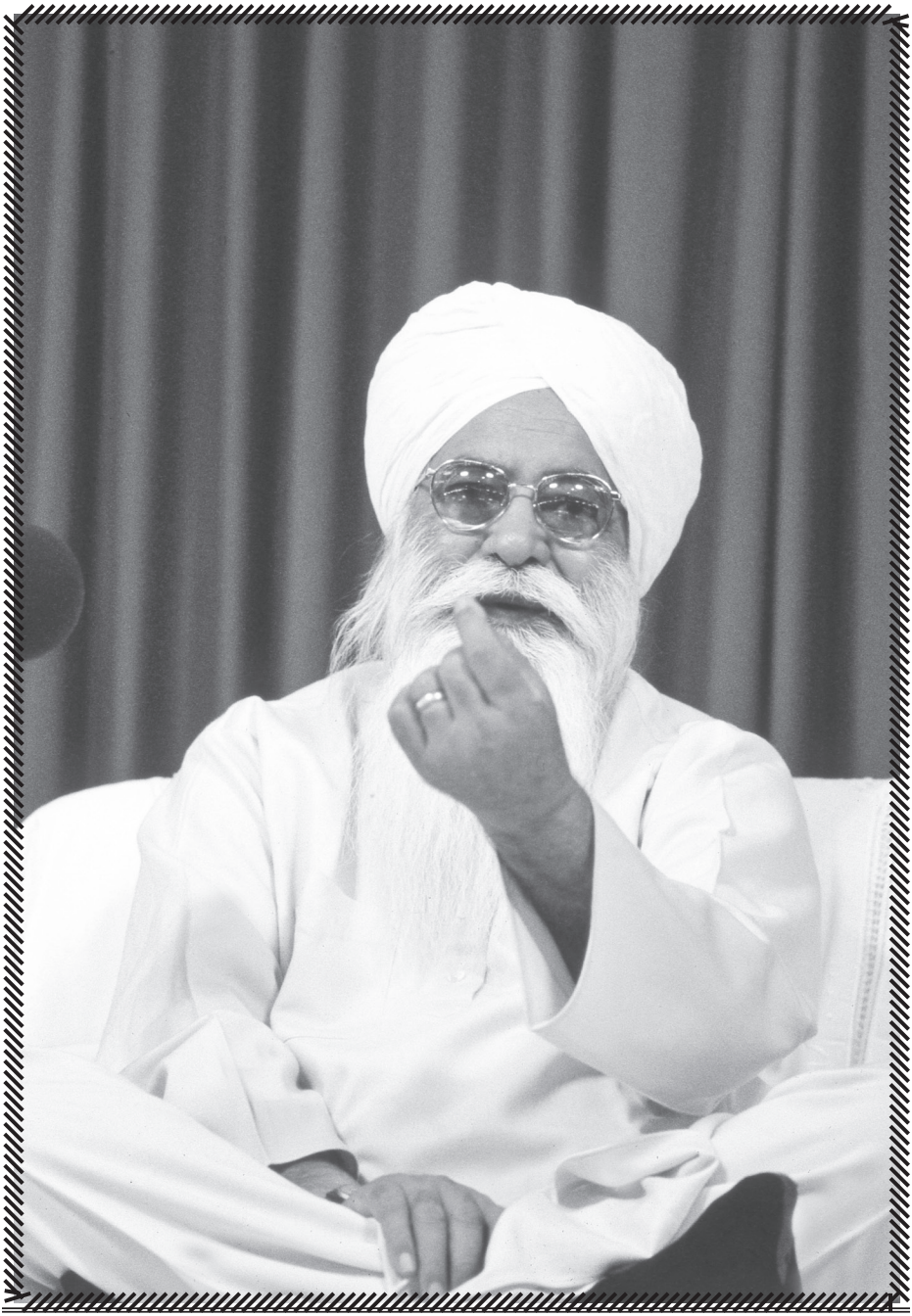

गुरु नानकदेव जी
की बानी

22 जुलाई 1996

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हम परमात्मा को भूल गए हैं

सनबोर्टन, अमेरिका DVD - 581(2)

करो मन गुरु चरनों से प्रीत, गुरु चरणों से प्रीत।

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, आपने इस गरीब आत्मा पर रहम किया और अपना यश करने का मौका दिया। आपके आगे पहली पातशाही गुरु नानकदेव जी महाराज का शब्द है। आप इस शब्द के अंदर हर पहलू से सन्तमत को, गुरुमत को बड़े प्यार से खोलकर समझाएंगे कि नाम के क्या फायदे हैं? गुरु किस तरह दया करके अमोलक नाम देकर अलख, अगम, पारब्रह्म को हमारे शरीर के अंदर ही दर्शन करवाता है। **हम परमात्मा को भूल गए हैं** अगर हम भूले जीव नाम से खाली रहते हैं तो हम किस तरह भूत–प्रेतों के पिंजर में कष्ट उठाते हैं और फिर उन्हीं चक्करों में जाकर पड़ जाते हैं।

अगर हम सन्त–सतगुरु की बानी को विचारें तो एक–एक लफ्ज करोड़ों रुपयों में भी नहीं मिलता अगर बानी को न विचारें तो अलग ख्याल है इसलिए हमें बानी को विचारना चाहिए। प्रेम–प्यार से सतसंग सुनें।

उन दिनों में पंडितों और मुल्ला लोगों का बहुत जोर था। कुछ पंडित लोग गुरु नानकदेव जी के पास आए और आपसे कहने लगे, ''आप किस राम को पुकारते हैं, आपके राम में क्या गुण हैं और वह क्या करता है? हम जिस राम को मानते है, हमारे उस रामचन्द्र ने लंका पर चढ़ाई की राक्षस रावण को मारा। आपके राम में भी कोई गुण है तो बताएं?''

गुरु नानकदेव जी उन पंडितों को बहुत प्यार से जवाब देते हैं कि आप जिस राम को मानते हैं वह मुक्तिदाता नहीं। त्रेता युग में राजा दशरथ के घर राम पैदा हुए। राम ने हिन्दुस्तान पर बहुत अच्छा शासन किया। लोग

रामराज्य को अब तक याद करते हैं अगर आप यह कहें कि वह आपको मुक्ति दे देगा, ऐसा नहीं।

एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट-घट में बैठा।
एक राम का सगल पसारा, एक राम इन्हूं से न्यारा।।

एक राम राजा दशरथ का बेटा था, वह अच्छा था। उसने गरीब-गुरबो की संभाल की, फरियाद सुनी। एक राम मन है जो अभी यहाँ पर है और कुछ ही देर में यह मन मुम्बई, कलकत्ता चला जाता है। हम सो जाएं फिर भी यह मन टिकता नहीं। अभी हम चुप बैठे हैं फिर भी पता नहीं यह किन-किन चक्करों में फिर रहा है। एक राम ने सारी दुनिया की रचना पैदा की है। मैं जिस राम की महिमा करता हूँ जिस राम के साथ मैं अपने सिक्खों-सेवकों को जोड़ता हूँ वह राम चौथे पद सच्चखंड में बैठा है।

रमतीता सो रामा।

वह राम कीड़ी, हाथी, जीव-जन्तु हर एक के अंदर रमा हुआ है हर एक को सतह दे रहा है। दुनिया में दो ताकते हैं सुर और असुर, नेगेटिव और पोजिटिव। जिस तरह रामचन्द्र ने राक्षसों को मारा उसी तरह हमारे अंदर पाँच राक्षस हैं इन्हें कहीं पाँच डाकू और कहीं पाँच चोर कहकर भी बयान किया गया है। हमारा राम इन्हें मारता है इन्हें बस में करता है।

असुर संघारण राम हमारा।। घट घट रमईआ राम प्यारा।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''देखो भई प्यारेयो! इन पाँच डाकुओं को मारने वाला हमारा प्यारा राम हमारे घट में बैठा है। हमारा उस राम से प्यार है जो सबमें रमा हुआ है और सबको सतह दे रहा है।''

नाले अलख न लखीऐ मूले गुरमुख लिख वीचारा हे।।

आप प्यार से कहते हैं, ''हम उस परमात्मा को अलख, अगम कहते हैं कि यह लखया नहीं जाता लेकिन गुरुमुखों ने उसे लखया है। जो साधना

करके त्रियापद, ब्रह्म, पारब्रह्म से ऊपर चला जाता है वह गुरुमुख बन जाता है। गुरुमुख साधना करके अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर सच्चखंड में पहुँच जाता है, परमात्मा रुप बन जाता है। गुरुमुख की महिमा बयान नहीं की जा सकती। गुरुमुख को परमात्मा की तरफ से यह वरदान होता है कि तू जिसे भी 'नाम' देगा मैं उसे जरुर अपने घर में जगह दूँगा।'' स्वामी जी महाराज अपनी बानी में लिखते हैं:

गुरुमुख की गत सबसे भारी, गुरुमुख कोटन जीव उद्धारी।

गुरमुख साधु सरण तुमारी।। कर किरपा प्रभ पार उतारी।।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''हे परमात्मा! हम तेरे गुरुमुख साधु की शरण में आ गए हैं तू हमारे ऊपर कृपा करके अपना नाम बख्श। हम पर दया करके अपने नाम की साधना करवा और हमारे ऊपर रहम कर।''

अगन पाणी सागर अति गहरा गुर सतगुर पार उतारा हे।।

सन्तों की बानी न रोचक होती है न भयानक होती है इनकी बानी यथार्थ होती है। सन्त हमसे नर्कों का डर दिखाकर भक्ति नहीं करवाते और न स्वर्गों का लालच देकर ही भक्ति करवाते हैं। सन्तों की सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि सन्त पढ़कर या सुना–सुनाया बयान नहीं करते वे बातों से पकवान नहीं बनाते, जो कुछ आँखों से देखते हैं वही बयान करते हैं।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि आग का समुंद्र दोजक (नर्क) है और पानी का समुंद्र यह दुनिया है। न इसकी गहराई का पता है न चौड़ाई का पता है। न हमें कोई नाव ही मिली है जिसके ऊपर हम सवार हो जाएं और न ही उस नाव का कोई मल्लाह है। जिनके पास न कोई नाव है और न ही कोई मल्लाह है। वे आग और पानी के समुंद्र से किस तरह तर सकते हैं? पूर्ण सतगुरु परमात्मा की तरफ से नाम का जहाज लेकर आते हैं। सतगुरु उन लहरों से वाकिफ होते हैं, जो सतगुरु के जहाज में सवार हो जाते हैं, सतगुरु उन्हें लहरों से बचाकर ले जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यारेयो! दो अक्षर तो एक छोटी सी लड़की भी बता सकती है लेकिन नाम अक्षर बता देना नहीं होता। आत्मा को धुरधाम पहुँचाना भी सतगुरु का काम होता है। जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है कि सतगुरु की ड्यूटी कितनी मुश्किल होती है। सतगुरु किस तरह नर्क में सड़ते हुए जीवों को बचाकर सच्चखंड ले जाते हैं।''

प्यारेयो! हम इस दुनिया को स्वर्ग समझे बैठे हैं इस दुनिया के साथ प्यार लगाकर अपना कीमती वक्त बर्बाद कर रहे हैं। जब अंदर जाकर नर्क देखेंगे क्या यह दुनिया नर्क से कम है? जब बच्चा पैदा होता है तो उसे अपनी होश नहीं होती। जवानी में विषय–विकार घेर लेते हैं अक्ल काम नहीं करती। शादी हो जाती है दिल फूला नहीं समाता लेकिन जब बीवी छोड़कर चली जाती है या दिल मे अभाव आ जाता है तो वही घर नर्क बनकर रह जाता है। बूढ़े हो जाते हैं कानों से कम सुनने लगता है, आँखों से कम दिखने लगता है और शरीर कमजोर हो जाता है।

मनमुख अंधले सोझी नाहीं।। आवह जाहे मरह मर जाही।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि हम दुनिया के जीव अंधे हैं। हमें अपनी खबर नहीं कि हम कहाँ से आए हैं, हमें यहाँ क्या करना चाहिए, इस जिंदगी के बाद हम कहाँ जाएंगे और हमारे साथ क्या होगा? क्या आगे कोई हमारी संभाल करेगा, क्या हमने संभाल करने वाले के साथ प्यार किया है कभी संपर्क किया है? हम आते हैं, जाते हैं। जन्मते हैं, मरते हैं। न अपनी समझ है और न आगे की ही समझ रखते हैं।

पूरब लिखया लेख न मिटई जम दर अंध खुआरा हे।।

हम नाम की तरफ क्यों नहीं आते, पाप हमारा पीछा क्यों नहीं छोड़ते क्योंकि हमारे ऊपर पूर्व के कर्मों का बहुत असर रहता है। जिस तरह जमींदार लोग फसल बीजते हैं उसे खाते हैं फिर बीजते है फिर खाते हैं। उसी तरह हम इस जन्म में जो कर्म करते हैं उन्हे भोगने के लिए फिर

किसी न किसी जामें में आ जाते हैं फिर कर्म करते हैं उन्हें भोगने के लिए फिर आ जाते हैं। जब हमें यह पता है कि हमारी करनी पर ही फैसला है तो क्यों न हम 'शब्द–नाम' की कमाई करें? इस जीवन में एक बार आएं और उडारी मारकर जहाँ से हमारी आत्मा आई है उसी जगह वापिस पहुँच जाए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग भजन–सिमरन नहीं करते वे अपनी गर्दन खुद छुरी से काट रहे हैं। जो भजन–सिमरन करते हैं आला चाल–चलन बना लेते हैं, वे अपना बचाव खुद कर रहे हैं।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं:

अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो।

जो अपने पर दया करता है उस पर परमात्मा भी दया करता है। जब हम बुरे कर्म करते हैं, बुरी आदतों से बाज नहीं आते तो फिर हमें यमदूत पकड़कर ले जाते हैं और धर्मराज के आगे पेश करते हैं। धर्मराज हिसाब–किताब दिखाकर कहता है, ''तेरा यह हिसाब–किताब है।'' धर्मराज उसके कर्मों के मुताबिक अगली योनि दे देता है।

प्यारेयो! आप पशु–पक्षियों की तरफ देख लें! क्या वे सुखी हैं? आकाश में पक्षी उड़ते हैं उन्हें डर रहता है क्योंकि बड़े पक्षी छोटे पक्षियों को पकड़ लेते हैं। जमीन पर देखें कि पशु किस तरह सहमें फिरते हैं। आप इंसान के जामें की तरफ निगाह मारकर देखें क्या इंसान सुखी है? कहीं बीमारी से परेशान है कहीं बेरोजगारी से परेशान है। आप जेलखाने में जाकर कैदियों की कहानियाँ सुनकर देखें! अस्पताल में जाकर मरीजों की चीख–पुकार सुनकर देखें क्या वे सुखी हैं?

हम दिन–रात बेजुबानों की गर्दनों पर छुरियाँ चला रहे हैं। हम जिनके माँस पर मसाले लगाकर खा रहे हैं चस्के उड़ा रहे हैं। कभी वक्त आएगा हमारी गर्दनें इनके नीचे होंगी इनके हाथों में छुरियाँ होंगी इसी तरह ये लोग भी हमारे ऊपर मसाले लगाकर भूनकर खाएंगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लिए दिए बिन रहे न कोय।

प्यारेयो! हिसाब देना पड़ता है। जो आज जानवरों भेड़–बकरियों की योनि में गले कटवा रहे हैं हो सकता है किसी वक्त ये सेठ–साहूकार या अच्छे जामें में हों। वहाँ गलतियाँ की इसलिए आज ख्वार हुए फिरते हैं, मौत की छुरी के नीचे आते हैं। बाबा बिशनदास जी से मुझे 'दो–शब्द' का भेद मिला था। आप कहा करते थे, ''अगर आपने मीट खाना है तो आप अपने शरीर पर छुरी से थोड़ी सी झरीट लगाकर देखें अगर आपको दर्द होता है तो आप जिस जानवर का गला काट रहे हैं उसे कितना दर्द होता है?'' गुरु नानकदेव जी तो यहाँ तक कहते हैं:

निर्दया नाहीं जोत उजाला।

जो लोग किसी की जान लेते हैं उनके अंदर ज्योत प्रकट हो ही नहीं सकती। मैं पहले भी सतसंग में सुनाया करता हूँ मेरा चश्मदीद वाक्या है कि हमारी आर्मी ब्यास दरिया पर काफी समय रही। उस समय फौजी भेड़ों का कत्ल कर रहे थे। एक फौजी की टाँग पर तलवार लगी लेकिन टाँग बच गई। उसे उठाकर अस्पताल ले गए उसने तो रोना ही था साथ वाले भी रोने लगे। जान तो भेड़ में भी थी। उस समय किसी को दर्द नहीं हुआ। प्यारेयो! जब जानवर को कत्ल करते हैं तो जानवर भी रोता है लेकिन उसकी चीख–पुकार को कौन सुनता है?

इक आवह जावह घर वास न पावह।। किरत के बांधे पाप कमावह।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''दुनिया आती है जाती है जन्मती है मरती है लेकिन आपने जिस घर में जाकर सदा रहना है वहाँ जाकर कभी निवास नहीं किया, कभी उसकी चिन्ता नहीं की। इन घरों में से अगर हम खुद नहीं उठेंगे तो हमारे चार भाई हमें उठाकर ले जाएंगे, कबों में रख आएंगे। हमें इन घरों की कितनी चिन्ता लगी हुई है और हम इन घरों को कितना संभालकर बनाते हैं।''

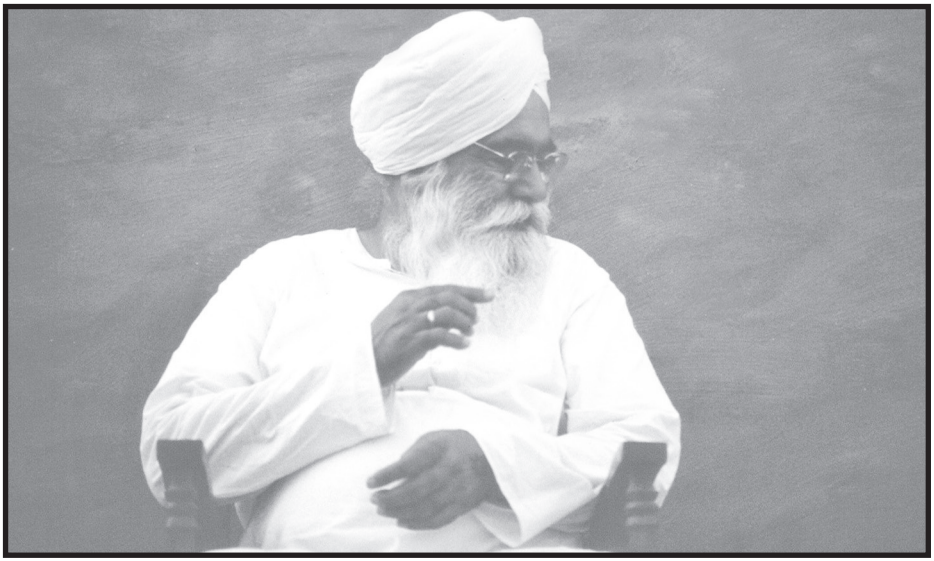

अंधले सोझी बूझ न काई लोभ बुरा अहंकारा हे।।

आप कहते हैं, ''हम अंधे हैं, हम लोभ में फँस जाते हैं तो हमें अपना आप दिखाई नहीं देता। जब हमारे पास धन–पदार्थ आ जाता है तो हम अहंकार करते हैं फिर हमें अपने से छोटा दिखाई देना बंद हो जाता है।''

पिर बिन क्या तिस धन सींगारा।। पर पिर राती खसम विसारा।।

गुरु नानकदेव जी की बानी में आत्मा को ज्यादातर स्त्री और परमात्मा को पति कहकर बयान किया गया है। अगर आत्मा को परमात्मा शब्द न मिले तो यह सुहागन न हो। हम बाहर जितने भी कर्मकांड, हार–श्रृंगार करते हैं ये सब फिजूल हैं आत्मा के किसी काम नहीं आते।

प्यारेयो! पश्चिम में तो शादी–शुदा और कुँवारी लड़कियों का एक ही पहनावा है। हिन्दुस्तान में अभी भी कुँवारी लड़कियों की आम पहचान होती है कि उन्होंने कोई हार–श्रृंगार नहीं लगाया होता और विधवा औरतें भी कोई हार–श्रृंगार नहीं करती। अगर कोई कुँवारी लड़की या विधवा औरत

हार–श्रृंगार करे तो हर कोई उसकी निन्दा करता है कि यह हार–श्रृंगार लगाकर किस पति को खुश कर रही है। जो स्त्री हार–श्रृंगार लगाए लेकिन उसका पति उसे कबूल न करे वह पराए पतियों के साथ व्याभिचार करे तो समाज उसकी निन्दा करता है, वह शोभा प्राप्त नहीं करती।

अगर आत्मा परमात्मा की भक्ति, 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं करती कभी देवी–देवताओं की कभी पितरों की, कभी पानी की पूजा करती है ये सब उस विधवा स्त्री की तरह है। आत्मा की यह भक्ति किसी भी लेखे में नहीं आती। ऐसे समाजिक लोग अपने आपको सुहागिन कहलवाते हैं, गुरमुख कहलवाते हैं ऐसे लोगों के लिए गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

नन्ना नाहें भोग नित भोगे न डिट्ठा न संभलया।
गल्लीं हों सोहगन भेंणें कन्त न कबहूँ मैं मिलया।।

गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला। परमात्मा के रास्ते का पता नहीं कि वह कहाँ है? अब आप सोचकर देखें! हम किस तरह सुहागन हो सकते हैं, किस तरह आत्मा पति–परमात्मा का रस मान सकती है?

ज्यों बेसुआ पूत बाप को कहीऐ त्यों फोकट कार विकारा हे।।

अब गुरु साहब कहते हैं, ''गुरु मिला नहीं नाम मिला नहीं तो कर्म कैसे हैं? जैसे वेश्या के पास अनेकों ही आते हैं अगर उसके लड़का हो जाए तो वह कौन से पिता का नाम लिखवाएगी।'' कबीर साहब कहते है:

ज्यों निगुरा सिमरन करे दिन में कई इक बार।
वेश्या सति होना चाहे कौन करे परतार।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

गुरु मंत्रहीनस जो प्राणी ध्रिगंत जन्म भृष्टने।
कूकर सूकर गर्दभ खल तुल्हे काकह।।

शब्द विसारे तिन्हां ठौर न ठाओं।
भ्रम भूले जो सूने घर काँओं।।

जो 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं करते वे कुत्ते, सूअर, गधे, साँप और कौए जैसे हैं क्योंकि उन्होंने मरकर इन्हीं योनियों में ही जाना होता है।

प्रेत पिंजर मह दूख घनेरे।। नरक पचह अग्यान अंधेरे।।

आप प्यार से कहते हैं कि सिर्फ कौए और साँप की योनियाँ ही नहीं मिलती बल्कि प्रेत का पिंजर भी मिलता है जो सबसे कठिन है। आप नर्कों का हाल पढ़कर देख लें या कमाई करके अंदर जाकर खुद अपनी आँखों से देखें किस तरह जीवों की दुर्दशा हो रही है। हम इस दुनिया में जो भोग मीठे समझते हैं आगे जाकर जब उनकी सजा मिलती है तो चीख–पुकार होती है। प्रेत की योनि के बाद इसे इंसान नहीं बनाते बल्कि नर्कों में ले जाते हैं। प्रेत का पिंजर इस तरह का नर्क है जैसे कोई हमें तंग मकान में बंद कर दे, दरवाजा न खोले उस समय हम कितना दु:ख महसूस करते हैं।

धरमराय की बाकी लीजै जिन हर का नाम विसारा है।।

सन्त हमें सच्चाई बताते हैं कि हम जो यह चलती–फिरती दुनिया देख रहे हैं इसका कोई कर्ता जरुर है। कोई न कोई गुप्त ताकत इसके पीछे काम कर रही है जिसे सन्त परमात्मा कहकर बयान करते हैं।

लेखा लीजे साँस ग्रास।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''आपके साँस–ग्रास का भी लेखा लिया जाएगा। नर्कों के बाद इस जीव को धर्मराज के पास ले जाया जाता है जो कर्म बाकी होते हैं उन कर्मों के मुताबिक जहाँ मुनासिब होता है धर्मराज फिर इसे नर्कों में भेज देता है। धर्मराज के पास उन्हें भेजा जाता है जिन्होंने नाम को विसार दिया, नाम का आसरा छोड़ दिया।''

सूरज तपै अगन बिख झाला।। अपत पसू मनमुख बेताला।।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''नर्कों में आग का सूरज तपता है। जो कुछ हमने मन के कहने पर किया वहाँ जाकर पता लगता है जब नर्कों का दु:ख सहना पड़ता है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर नर्कों की एक भी चिंगारी दुनिया में आ जाए तो यह दुनिया सड़ जाए।'' सन्त हमारे ऊपर रहम खाकर कहते हैं प्यारे बच्चो! इंसान का जामा आपको एक मौका मिला है अगर आप नर्कों के ताप से बचना चाहते हैं तो 'शब्द–नाम' की कमाई करें।'' आपने गर्मियों में जंगल में आग लगी हुई देखी होगी। उस आग को जितना बुझाते हैं हवा आने पर वह आग फैलती जाती है। जैसे समुंद्र में लहरे उठती हैं, उसी तरह हमारे अंदर लहरे उठती हैं।

आसा मनसा कूड़ कमावह रोग बुरा बुरयारा हे।।

आप कहते हैं, ''हम दुनिया में आकर दुनिया की आशा करते हैं। बेटों की आशा की, समाज की आशा की यही दुनिया खाई और पी।''

जहाँ आसा तहाँ वासा।

मस्तक भार कल्लर सिर भारा।। क्योंकर भवजल लंघस पारा।।

सिर पर पापों और पुण्यों का बोझ है चला नहीं जाता आगे गहराई है, सिर पर डंडे पड़ते हैं। यमदूत कहते हैं कि यह तेरे ही कर्मों का बोझ है अब तू इन्हें उठाकर चल।

सतगुर बोहिथ आद जुगादी राम नाम निसतारा हे।।

प्यारेयो! आज तक संसार में जितने भी सन्त–महात्मा हुए हैं वे हमारे ऊपर रहम खाकर पवित्र ग्रंथ लिखकर छोड़ गए हैं। किसी भी ग्रंथ में एक अक्षर भी ऐसा नहीं लिखा कि आप नाम के बगैर तर जाएंगे, गुरु के बगैर नाम प्राप्त कर लेंगे। हम सब कुछ पढ़कर भी काल के बहकावे में आकर सिर फेर जाते हैं कि हमें नाम की जरुरत नहीं, गुरु की जरुरत नहीं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि मैं आपको कोई नई बात नहीं कह रहा हूँ, जब से यह दुनिया बनी है तब से ही यह सिलसिला चला आ रहा है।

गुरु नानकदेव जी ने नया रास्ता नहीं चलाया। जो भी सन्त–महात्मा आए उन्होंने यही बताया कि आदि–जुगादि से परमात्मा ने यह रास्ता बनाया है। यह रास्ता न कबीर साहब ने बनाया है न गुरु नानकदेव जी ने बनाया है। यह रास्ता उतना ही पुराना है जितना परमात्मा पुराना है। परमात्मा अपने मिलने का जो चाहे तरीका रख सकता था। सबसे पहले सतगुरु के नाम के जहाज में बैठें। सतगुरु ही हमें नाम के जहाज में बिठाकर पार लेकर जा सकता है। न यह सिलसिला बदला है, न बदलेगा।

कहो नानक प्रभ ऐह जनाई, बिन गुरु मुक्ति न पाईऐ भाई।

कबीर साहब भी कहते हैं:

कथा कीर्तन कल बिखे भवसागर की नाव।
कहे कबीर जग तरन को नाहीं और उपाव।।

पुत्र कलत्र जग हेत प्यारा।। माया मोह पसरया पासारा।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि **हम परमात्मा को भूल गए हैं।** हमने अपने ख्याल को परमात्मा की तरफ लगाना था। हम कभी पुत्रों कभी पौत्रों तो कभी माया के प्यार में बह जाते हैं। प्यार एक है आत्मा एक है चाहे परमात्मा की तरफ लगा दें या दुनिया की तरफ लगा दें।

गुरमेलसिंह ने पहले जो भजन पढ़ा है उसमें यही था कि हम जिन सगे–सम्बधिंयों के साथ प्यार करते हैं वे हमें उठाकर चिता में रख आते हैं। जिन्होंने हमारे साथ नहीं जाना हम उनके साथ प्यार करते हैं। सन्त–सतगुरु ने हमारे साथ जाना है लेकिन हमने सतगुरु को बिसार रखा है।

जम के फाहे सतगुर तोड़े गुरमुख तत बीचारा हे।।

गुरुमुखों को इस बात की समझ है उन्होंने आँखों से देखा है कि यम बाँध लेते हैं उनसे गुरु ही छुड़वा सकता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सन्ता शरण जो पवे सो बद्धा छुट्टे।

कूड़ मुट्ठी चालै बहु राही।। मनमुख दाझै पड़ पड़ भाही।।

हम कभी पत्थर पूजते हैं कभी पानी पूजते हैं कभी धर्मपुस्तकों का पाठ करके सोचते हैं कि हम पार हो जाएंगे लेकिन इन्होंने हमारे काम नहीं आना। परमात्मा की भक्ति का रास्ता छोड़ दिया जो रास्ते मन ने बनाए हैं उन रास्तों पर चल पड़े। प्यारेयो! बानी तो बाणों की तरह है अगर हम इसे विचारें अगर न विचारें तो और बात है।

छठे गुरु हरगोबिंद के वक्त सुथरा लाधड़क फकीर हुआ है, वह गुरु गोबिंद सिंह जी के वक्त तक रहा है। सुथरा हास्यरस का कवि था। सिक्ख पाठ कर रहे थे सुथरा ने दो मिनट तो बानी सुनी फिर पीठ करके बैठ गया। सिक्खों ने शिकायत की कि सुथरा शाह ने गुरुबानी की बहुत बेअदबी की है यह बानी की तरफ पीठ करके बैठ गया है। गुरु साहब ने सुथरे को बुलाकर पूछा, ''ये सारे सिक्ख तेरी शिकायत कर रहे हैं कि तूने बानी का अदब नहीं किया, बानी की तरफ पीठ करके बानी सुनता है।''

सुथरा शाह ने कहा, ''मैं बानी की तरफ मुँह करके सुन रहा था लेकिन बानी मेरे मुँह पर थप्पड़ मारने लगी कि तेरे अंदर यह ऐब है, वह ऐब है। मेरा मुँह थक गया फिर मैंने पीठ कर ली। मैं तो मार सहन नहीं कर सका लेकिन ये लोग धन्य हैं जो रोज थप्पड़ खाते हैं।'' बानी ने तो हमारे ऐब ही बताने हैं, हमें नाम की तरफ ही लगाना है।

सुथरा का यह जवाब सुनकर सब लाजवाब हो गए। सुथरा कमाई वाला फकीर था। उसने जो कुछ बताया अंदर से ही बताया था। गुरुबानी तो थप्पड़ मारती है लेकिन हम पढ़ लेते हैं सुन लेते हैं बानी जो कहती है वह हम करने के लिए तैयार नहीं।

मेरे प्यारेयो! यह तो एक कहानी है। आप यहाँ सतसंग में देखें कि बहुत से प्रेमी सोए हुए हैं। बहुत से उबासी ले रहे हैं और बहुत से भँवरे की तरह टिकटिकी लगाकर देख रहे हैं। आधे से ज्यादा प्रेमी आँखों में

से पानी निकाल रहे हैं क्योंकि जिन्हें दर्द होता है वे रो रहे हैं। जिन्हें रस आता है वे भँवरे की तरह स्वरुप को देख रहे हैं।

अमृत नाम गुरु वडदाणा नाम जपो सुख सारा हे।।

गुरु नानकदेव जी प्यार से बार–बार नाम जपने पर जोर देते हैं। सुख और शान्ति नाम में है। जिस नाम को जपकर मुक्ति होनी है उसे आप किसी धर्मग्रंथ में से प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु नाम का दाता बनकर आता है। गुरु नाम मुफ्त में देता है, नाम की कोई फीस नहीं रखता।

सतगुर तुट्ठा साच दृढ़ाए।। सभ दुख मेटे मारग पाए।।

जब परमात्मा दया–मेहर करता है हमें सतगुरु के चरणों में ले आता है। जब सतगुरु दया–मेहर करते हैं तो वे हमें नाम का दान दे देते हैं। वे जब और दया करते हैं तो हम नाम की कमाई में लग जाते हैं। जब हम अपने आप पर दया करते हैं तो हम नाम जपकर सच्चा सुख, सच्ची शान्ति प्राप्त कर लेते हैं।

कंडा पाए न गडई मूले जिस सतगुर राखणहारा हे।।

जब हम सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार करके सतगुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं तब अगर पैर में मामूली सा काँटा भी लग जाए तो उसका दर्द गुरु को जाकर प्राप्त होता है, गुरु सहायता करता है। हम गुरु को इस तरह अपने साथ देखते हैं जैसे हमें हमारी परछाई दिखाई देती है। गुरु पहले भी सेवक के साथ रहता है लेकिन जब तक हम गुरु को प्रत्यक्ष नहीं करते तब तक हमें यकीन नहीं आता।

मैं अपनी जिंदगी का वाक्या बताया करता हूँ उस समय महाराज कृपाल सिंह जी देह में थे। गाँव ढपाली में हमारी रिश्तेदारी थी। वहाँ एक साधु ने धूनियाँ तपाई, जलधारा किया। जब यह सारी क्रिया खत्म हो जाती है तो गुरु ग्रंथ साहब के पाठ का भोग डाला जाता है। कई गाँवों के लोग इकट्ठे हो जाते हैं। मैं वहाँ चला गया क्योंकि मैंने अपनी जिंदगी में यह

क्रिया की है। मैं जब वहाँ गया तो वह साधु उठकर खड़ा हो गया, उसने कहा, ''आप मेरी चारपाई पर बराबर आकर बैठें।'' मैंने कहा, ''महात्मा जी! इस पर आप बैठे अच्छे लगते हैं मैं नीचे बैठूंगा।''

उसने बार-बार जोर दिया आखिर जब मैं चारपाई पर न बैठा तो उसने मेरे लिए एक बोरी मँगवाकर बिछवा दी। वह साधु बार-बार यही कह रहा था, ''मुझे तेरे पीछे सफेद कपड़ों वाला खड़ा दिखाई दे रहा है।'' मैंने कहा, ''मैं तो अकेला ही हूँ।'' उसने दस बार अपने सेवकों के सामने यही कहा कि मुझे तेरे पीछे सफेद कपड़े वाला दिखाई दे रहा है।

मुझे तो पता था कि सफेद कपड़ो वाला परमात्मा कृपाल है, जिसने मुझे नाम दिया है। प्यारेयो! दूसरा भी इस बात को मानता है कि इसके पीछे कोई है लेकिन हमें यकीन तब आता है जब हम प्रत्यक्ष कर लेते हैं। गुरु हमेशा सेवक के साथ होता है।

बलवंत लड़की को बहुत संगत जानती है। यह बचपन से ही मेरे पास आई मैंने इसे लड़कियों की तरह ही पाला है, गुरमेल के साथ इसकी शादी की है। मैं जब पहले टूर पर आया उस समय यह बहुत छोटी थी। उदास होकर आश्रम के बाहर की तरफ आँखें बंद करके बैठी थी। महाराज कृपाल ने पाँच तत्वों के भौतिक शरीर में आकर इसे दर्शन दिए और कहा, ''बेटी! तू इतनी उदास क्यों है मैं तेरे पास ही हूँ।'' बलवंत ने यहाँ पत्र भेजा। पप्पू ने वह पत्र संगत को पढ़कर सुनाया कि किस तरह महाराज कृपाल अपने सेवकों के अंग-संग हैं, किस तरह रक्षा करते हैं।

मैंने रसल प्रकिन्स और जूडिथ के कहने पर दूसरे टूर पर बलवंत को अपने साथ रखा, वह चार महीने का टूर था। प्यारेयो! सतगुरु हमेशा सेवक के साथ रहता है, सेवक की रक्षा करता है। मैं तो यह कहूँगा कि सतगुरु सतसंगी के परिवार के जीवों तक की भी संभाल करता है।

खेहू खेह रलै तन छीजै।। मनमुख पाथर सैल न भीजै।।
करण पलाव करे बहुतेरे नरक सुरग अवतारा हे।।
माया बिख भुयंगम नाले।। इन दुबिधा घर बहुते गाले।।
सतगुर बाझों प्रीत न उपजै भगति रत्ते पतीआरा हे।।
साकत माया कौ बहु धावह।। नाम विसार कहा सुख पावह।।
त्रिहगुण अंतर खपह खपावह नाहीं पार उतारा हे।।
कूकर सूकर कहीऐ कूड़यारा।। भौंक मरह भौं भौं भौंहारा।।
मन तन झूठे कूड़ कमावह दुरमत दरगह हारा हे।।
सतगुर मिलै त मनुआं टेकै।। राम नाम दे सरण परेकै।।
हर धुन नाम अमोलक देवै हर जस दरगह प्यारा हे।।
राम नाम साधु सरणाई।। सतगुर बचनी गत मित पाई।।
नानक हर जप हर मन मेरे हर मेले मेलणहारा हे।।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने हमें बड़े प्यार से इस छोटे से शब्द में सन्तमत, गुरुमत के मुत्तलिक समझाया कि किस तरह परमात्मा दया करता है तो जीव को गुरु के चरणों में लेकर आता है। गुरु दया करता है तो हमें नाम के साथ जोड़ता है। जब हम अपने आप पर दया करते हैं तो हम 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं, अपने जीवन को सफल बना लेते हैं।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि आप नाम की कमाई करें। नाम की कमाई के बगैर जीव कुत्ते की तरह है जैसे कुत्ते भौंक–भौंककर चले जाते हैं। मुर्गे क्यां–क्यां करके चले जाते हैं। मुक्ति नाम में है और नाम सतगुरु से मिलता है। हमें भी चाहिए गुरु नानकदेव जी ने जो कुछ कहा है उसके मुताबिक अपने जीवन को ढ़ालकर सफल बना लें।

***

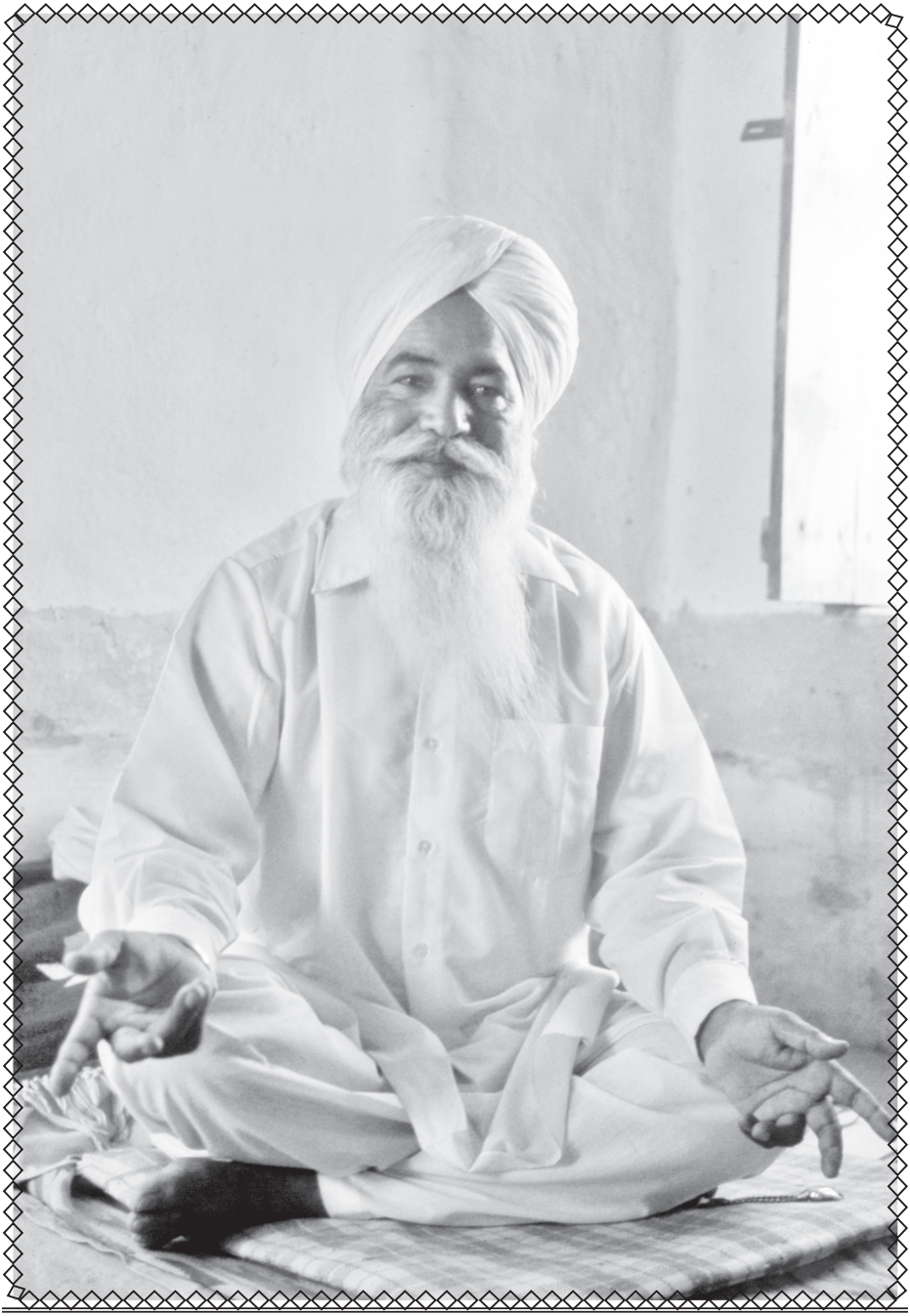

29 सितम्बर 1980

आप कभी अकेले नहीं हैं

77 आर.बी आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी: *जब हम लाईन में खड़े होकर आपके दर्शन करते हैं, उस समय मैं सोचता हूँ कि मैं अपनी नजर कहाँ पर टिकाऊँ। क्या मुझे आपकी एक आँख पर ध्यान टिकाना चाहिए या दोनों आँखों पर ध्यान टिकाना चाहिए लेकिन मुझे दोनों आँखों पर ध्यान टिकाने में मुश्किल होती है।*

बाबा जी: आप जानते हैं कि आँखें आत्मा की खिड़कियाँ होती हैं। हम सबके अंदर एक ही आत्मा है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप एक आँख पर ध्यान दें या दोनों आँखों पर ध्यान दें लेकिन आपको दोनों आँखों में अपना ध्यान टिकाने की कोशिश करनी चाहिए, यह मुश्किल नहीं है। शुरू–शुरू में यह मुश्किल लगता है लेकिन लगातार अभ्यास करने से यह मुश्किल नहीं लगता।

जिसने आपको पवित्र करना है वह आपकी दोनों आँखों में देखेगा और उसका दृष्टि डालना ही आपको पवित्र करेगा। आपका उस पर नजर डालना जरूरी नहीं जितना कि वह आप पर दृष्टि डालता है। पूर्ण गुरु की दृष्टि अमृत से भरी होती है। गुरु जब हमारे ऊपर अपनी दृष्टि डालते हैं उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके सामने औरत खड़ी है या मर्द खड़ा है, क्योंकि उनकी नजर तो सिर्फ आत्मा पर होती है।

हजरत बाहू कहते है, ''पूर्ण गुरु की एक झलक ही लाखों–करोड़ो आत्माओं को मुक्ति दिला सकती है।'' लाखों बुद्धिजीवी लोग किसी एक को भी जीवन के भवसागर से पार नहीं उतार सकते लेकिन सतगुरु की नजर दूसरे लोगों की नजर से कुछ अलग होती है इसलिए सतगुरु की एक झलक भी कई लोगों को मुक्ति दिला सकती है।

हुजूर महाराज कहा करते थे कि आँख ही आँख को दे सकती है और आप यह भी कहा करते थे कि सन्तों की आँखों में प्रकाश होता है। वे हमें वह प्रकाश देते हैं जो हमारे जीवन को सहारा दे सकता है और मुक्ति दे सकता है। भाई नन्द लाल ने अपने प्यारे गुरु गोबिंद सिंह जी से यही कहा:

तेरी इक नजर है, मेरी जिंदगी का सवाल है।

हे सतगुरु! आपके लिए तो एक झलक का मसला है लेकिन यह मेरे पूरे जीवन का सवाल है। आपकी एक झलक मेरी जिंदगी बना देगी।

मैंने अपने प्यारे सतगुरु से यही प्रार्थना की कि हम आपकी इंतजार में बैठे हैं। हमें आपके अमृत भरे दर्शनों की प्यास है, हम आपके आसरे हैं। आप हमारे प्यारे कृपाल हैं आप हमारी आँखों की प्यास क्यों नहीं बुझाते?

हमें जब भी दर्शनों का मौका मिले तो हमने यह याद नहीं रखना कि हम एक आँख में देख रहे हैं या दोनों आँखों में देख रहे हैं। हम जिसके दर्शन कर रहे हैं उसके प्रेम में हम इतना मगन हो जाएं कि अपने आपको भी भूल जाए हमें केवल वही दिखाई दे। स्वामी जी महाराज कहते है:

मेरे गुरु का कोई स्वरूप देखे हो जाए हूर परन्दरी।

एक प्रेमी: *हर रोज अभ्यास में बैठने से पहले आप हमसे कहते हैं कि हमने अपने मन को शान्त करना है, मन में कोई विचार नहीं लाना। ऐसा करने से यह लगातार सिमरन करने में हमारी मदद करेगा। मैं चाहे कितनी भी दृढ़ता से सिमरन करूँ मेरा मन और भी बलवान होता जाता है। विचार आते रहते हैं, मैं तेजी से सिमरन करता हूँ इससे पहले कि मुझे पता चले, सिमरन और मन दोनों एक साथ चल रहे होते हैं लेकिन जल्द ही मन के विचार मुझे दूर ले जाना शुरू कर देते हैं। जिन्हें ऐसी दिक्कत होती है आप उन्हें क्या सलाह देंगे?*

बाबा जी: मैंने कई बार बताया है कि हार जाने से हार मान लेना ज्यादा बुरा होता है। अपने मन के आगे हार न मानें, निराश न हों उत्साह

को खत्म न होने दें। मन के साथ संघर्ष जारी रखें और सिमरन से अपने मन पर प्रहार करते रहें। विचारों से होने वाली दिक्कत कोई नई नहीं।

इस जामें में आने से कई युग पहले, हमारे सभी पूर्व जन्मों में हमें इन विचारों से परेशानी होती रही है। हमारे संकल्प और विचार हमें बार–बार इस दुनिया में लेकर आते हैं। यह भी एक तरह का सिमरन है क्योंकि हमें दुनियावी सिमरन करने की आदत पड़ी हुई है इसलिए सतगुरु हमें अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं जो हमारे उस सिमरन को काटता है। सतगुरु का दिया हुआ सिमरन ही हमारी दुनियावी सिमरन करने की आदत से छुटकारा दिला सकता है। केवल सतगुरु का ध्यान ही हमारा ध्यान दुनियावी चीजों से हटा सकता है।

मन काल का एजेंट है, यह बड़ी ईमानदारी से अपने मालिक की ड्यूटी करता है। यह अपने मालिक, काल का आज्ञाकारी है। जैसे मन अपने मालिक के प्रति वफादार और ईमानदार है उसी तरह हमारी भी ड्यूटी बनती है कि हम अपने सतगुरु का कहना मानें। हमें अपने गुरु का काम ईमानदारी से करना चाहिए; वह काम लगातार सिमरन करना है।

मन की यह आदत है कि जैसे ही आप अभ्यास के लिए बैठते हैं यह उसी समय अपना दफ्तर खोलकर बैठ जाता है। मन अपनी किताब खोलकर पढ़ना शुरू कर देता है अगर आप मन की तरफ ध्यान देंगे उसकी सुनेंगे तो यह आपको ऐसी स्थिति में ले आएगा कि सिर्फ आपका शरीर ही अभ्यास में बैठा होगा और आप कहीं और होंगे। अगर आप मन की तरफ ध्यान नहीं देंगे तो आपको उससे कोई परेशानी नहीं होगी।

मैंने यह कहानी कई बार सुनाई है और यह कहानी मैगजीन में भी छप चुकी है लेकिन फिर भी मैं आपको सुनाना चाहूँगा। एक बार मेरे पास प्रेमियों का ग्रुप आया, वे मेरे सामने बैठकर अभ्यास कर रहे थे। एक प्रेमी अभ्यास के दौरान सो गया। जब हमने उसे जगाया और पूछा कि वह क्या

कर रहा था? उसने कहा मैं जब अभ्यास में बैठा उस समय मेरा मन मुझे यहाँ से चालीस मील दूर गाँव में ले गया। मैं वहाँ पर बैलगाड़ी लोड कर रहा था कि वह बैलगाड़ी झाड़ियो में फँस गई। जब हमने उसे जगाया तो वह वापिस आ गया कि मैं राजस्थान में बैठा हूँ। उसका मन उसे चालीस मील दूर उसके पुराने गाँव ले गया। मन की यह आदत होती है, वह आपको बहुत दूर ले जा सकता है चाहे आप गुरु के पास ही क्यों न बैठे हों।

आपको पता है कि एक माता किस तरह अपने छोटे बच्चे का ख्याल रखती है इसी तरह हमें अपने मन का ध्यान रखना चाहिए। हमने हमेशा अपने मन पर नजर रखनी है और अपने मन का इम्तिहान लेते रहना चाहिए। अभ्यास के बाद हमें विचार करना चाहिए कि असल में हमने सिमरन करते हुए कितना समय बिताया और कब हमारा मन हमें अभ्यास से दूर ले गया? हमने मन की चालाकियों से बचना है। अगर आप अभ्यास के दौरान मन की चालाकियों की तरफ ध्यान रखेंगे तो आप आसानी से इसे कंट्रोल करने में सफल हो जाएंगे।

सुखदेव मुनि राजा जनक के पास नामदान के लिए जाने से पहले सोचा करता कि एक दुनियावी राजा कैसे एक त्यागी का गुरु बन सकता है? सुखदेव मुनि जन्म से ही त्यागी था। सुखदेव मुनि जब अपने पिता वेद व्यास से नाम के बारे में पूछता तो वेद व्यास जी उससे यही कहते कि इन दिनों केवल राजा जनक ही पूर्ण गुरु हैं। राजा जनक तुम्हें नाम के साथ जोड़ सकते हैं, तुम उन्हें दुनियावी इंसान न समझो।

सुखदेव मुनि जब भी राजा जनक के पास नामदान के लिए जाने की सोचता तो उसके मन में यही सवाल उठता कि एक दुनियावी राजा कैसे एक त्यागी का गुरु हो सकता है? इसलिए वह कई सालों तक राजा जनक से मिलने नहीं गया। जब उसे यह अहसास हुआ कि राजा जनक के पास जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं तो आखिर वह राजा जनक से मिलने

गया। राजा जनक के पास जाते हुए सुखदेव मुनि ने अपने कपड़े–कमंडल और छड़ी राजमहल के आँगन में छोड़ दिए।

राजा जनक एक पूर्ण सन्त थे। जब सुखदेव मुनि और राजा जनक आपस में बात कर रहे थे, तब राजा जनक ने सुखदेव मुनि का इम्तिहान लेना चाहा। राजा जनक ने कुछ इस तरह किया कि कुछ समय बाद एक सेवक राजा जनक के पास आकर बोला, ''शहर की छावनी में आग लग गई है।'' यह सुनकर राजा जनक बोले, ''जो परमात्मा की मर्जी।'' वह सेवक चला गया।

सुखदेव मुनि ने सोचा कि यह आदमी राजा बनने लायक नहीं। सेना तो राजा का दिल होती है, राजा को आग में फँसे लोगों को बचाने के लिए जाना चाहिए था लेकिन इन्होनें कोई परवाह नहीं की। कुछ समय बाद एक और सेवक आया और बोला, ''अब शहर में आग लग गई है।'' राजा जनक बिल्कुल शान्त रहे, उन्होंने कहा, ''परमात्मा की मर्जी।''

सुखदेव मुनि के मन में फिर से गलत विचार आया कि इसके महल में बहुत कुछ होगा इसलिए यह सोचता है कि मैं इस शहर के लोगों की परवाह क्यों करूँ? लेकिन यह बहुत बुरी बात है इसे केवल अपनी परवाह है। यह दूसरे लोगों को बचाने के लिए कुछ नहीं कर रहा।

कुछ समय बाद एक और सेवक आया और बोला, ''महाराज जी! अब महल में भी आग लग गई है।'' उस समय सुखदेव मुनि अपने कपड़े, कमंडल और छड़ी बचाने के लिए आँगन की तरफ भागने लगा तब राजा जनक उसकी बाँह पकड़कर बोले, ''अब तुम मुझे बताओ कि कौन त्यागी है?'' तुमने अपने कपड़े और कुछ चीजें महल के आँगन में छोड़ी थी तुम्हें डर है अगर भागकर तुमने उन्हें नहीं उठाया तो वे जल जाएंगी।

राजा जनक ने कहा पहले छावनी में आग लगी फिर शहर में आग लगी और अब महल में आग लगी तो मैं उन्हें बचाने नहीं गया क्योंकि मैं इन सब

चीजों के साथ बंधा हुआ नहीं हूँ। अब तुम फैसला कर सकते हों कि कौन त्यागी है? सुखदेव मुनि को समझ आ गया कि राजा जनक सांसारिक चीजों से बंधें हुए नहीं है लेकिन वे एक दुनियावी इंसान की तरह जीवन व्यतीत करते हैं। राजा जनक एक राजा हैं उन पर बहुत सी जिम्मेवारियाँ हैं, वे अपना फर्ज निभा रहे हैं। अब सुखदेव मुनि को समझ आया कि राजा जनक पूर्ण सन्त हैं। सुखदेव मुनि ने प्रार्थना की, ''सतगुरु! अब आप मुझे नामदान दें।''

राजा जनक सुखदेव मुनि को इतनी आसानी से नामदान देने वाले नहीं थे। उन्होंने सुखदेव मुनि से कहा, ''मैं तुम्हें नामदान दूँगा लेकिन मैं पहले तुम्हारी कुछ परिक्षाएं लूंगा अगर तुम उन परिक्षाओं में पास हो जाओगे तभी तुम्हें नामदान मिलेगा।'' राजा जनक ने सुखदेव मुनि को तेल से भरा एक प्याला देकर कहा, ''तुम तेल से भरे इस प्याले को हाथ में रखकर शहर का चक्कर लगाकर आओ अगर तेल की एक बूँद गिराए बिना वापिस आ जाओगे तो मैं समझूंगा कि तुम ध्यान टिका सकते हो, अभ्यास कर सकते हो तभी मैं तुम्हें नामदान दूँगा। ख्याल रखना कि तलवार लिए हुए एक आदमी तुम्हारे पीछे चलता रहेगा अगर तेल की एक बूँद भी गिरी तो वह आदमी तुम्हारा सिर काट देगा।''

जब सुखदेव मुनि तेल का प्याला लेकर शहर में गया तब राजा जनक ने सुखदेव मुनि का ध्यान भटकाने के लिए शहर में कई जगह नाच–गाने वाली और ऐसी ही कुछ चीजों की व्यवस्था कर दी। सुखदेव मुनि परमात्मा को पाना चाहता था, पूर्ण गुरु से नामदान पाना चाहता था। उसे मौत का डर था अगर तेल की एक भी बूँद गिरी तो उसका सिर काट दिया जाएगा। उसने तेल के प्याले में अपना ध्यान टिकाकर सारे शहर का चक्कर लगा दिया और तेल के प्याले के सिवाय कुछ नहीं देखा।

सुखदेव मुनि जब परीक्षा पास करके राजा जनक के पास वापिस आया तो राजा जनक ने पूछा, ''तुमने शहर में क्या–क्या देखा? क्या तुम्हें शहर पसंद आया?'' सुखदेव मुनि ने कहा, ''मैंने शहर में कुछ नहीं देखा। मुझे पता नहीं कि वहाँ क्या हो रहा था क्योंकि मुझे डर था अगर मेरा ध्यान तेल के प्याले से हटा तो मैं मार दिया जाऊँगा।''

राजा जनक ने कहा कि अब तुम अभ्यास में ध्यान टिका सकते हो। नामदान मिलने पर अगर तुम इतना ही ध्यान भजन–अभ्यास पर दोगे तो तुम कामयाब हो जाओगे। उसके बाद बहुत सारी परीक्षाएं पास करने के बाद सुखदेव मुनि को नामदान मिला। सुखदेव मुनि का ध्यान भजन–अभ्यास में बहुत टिकता था और बाद में वे एक पूर्ण सन्त बने।

अगर हम यह याद रखें कि मौत हमारे सिर पर खड़ी है तो हम यहाँ–वहाँ नहीं देखेंगे। हममें परमात्मा को पाने की सच्ची चाह हो तो सवाल ही पैदा नहीं होता कि मन हमें सिमरन से दूर ले जाए। हम सिमरन में इस तरह सावधान हो जाएंगे जिस तरह सुखदेव मुनि तेल से भरे प्याले के लिए सावधान था।

हमारा दिमाग दुनिया के विषय–विकारों से भरा हुआ है। अगर हमें अपने गुरु का डर हो, मौत का डर हो और हमें यह याद रहे कि हमारा इस संसार में आने का मकसद परमात्मा को पाना है तो हमारे लिए अपने मन को दुनियावी विषय–विकारों से दूर ले जाना मुश्किल नहीं होगा। हम आसानी से अपना सारा ध्यान सिमरन में टिका सकते हैं।

मैं जब आर्मी में था तब हमें हफ्ते में एक दिन मुफ्त फिल्म दिखाई जाती थी। परमात्मा की दया से मैं अपनी जगह किसी और को फिल्म देखने भेज देता और उसकी जगह ड्यूटी दे देता। कुछ लोगों ने और हमारे कमांडर ने पूछा कि तुम फिल्म देखने क्यों नहीं जाते? तब मैंने उन्हें प्यार से कहा, ''मुफ्त की जहर भी अपना काम करती है। फिल्में देखने से मन

में दुनियावी लहरें उठती हैं, मन दुनिया में और ज्यादा फैलता है। मैं जब अभ्यास में बैठूंगा तो अभ्यास की जगह मुझे फिल्म ही दिखाई देगी।''

मैंने अपने जीवन में पहली बार सन्तबानी आश्रम, अमेरिका में अपनी ही फिल्म देखी, उससे पहले मैंने कोई फिल्म नहीं देखी थी। फिल्म देखने का कारण यह था कि मैं जानना चाहता था कि ये कैमरा लेकर मेरे सामने खड़े हो जाते हैं और ये फिल्म कैसे बनाते हैं।

अगर कोई मुझे फिल्म देखने के लिए उकसाता है तो मैं उससे यही कहता हूँ, ''आप अंदर जाकर अपनी अंदरूनी फिल्म देखें फिर आप बाहरी फिल्में देखना पसन्द नहीं करेंगे। अगर आप थोड़ा सा भी अंदर जाते हैं, थोड़ा सा ध्यान दोनों आँखों के बीच टिकाना शुरू करते हैं तो आप अपने अंदर वे सब सुंदर चीजें देख सकेंगे जो आपको खुशी देंगी। तब आप समझेंगे कि किस तरह आपके अंदर खूबसूरत चीजें भरी हुई हैं।''

गुरु का स्वरूप इतना सुंदर है कि उसे ब्यान नहीं किया जा सकता। गुरु की सुंदरता का एक अंश भी आपको बाहरी चीजों में नहीं दिखेगा। अगर आप थोड़ा सा भी अंदर जाना शुरू करें तो आप उस प्रेम की ज्योत का अनुभव कर सकेंगे, जो आपके अंदर जल रही है। जब आपको यह अनुभव होगा तो आप बाहरी फिल्में देखना पसंद नहीं करेंगे।

अभी आपके लिए बाहरी फिल्मों और बाहरी चीजों से ध्यान हटाना मुश्किल है लेकिन जब आप अंदर जाएंगे और वह सब चीजें अपने अंदर देखेंगे तो आपके लिए फिल्म देखने के बारे में सोचना बहुत मुश्किल हो जाएगा। जब आप फिल्म देखने जाते हैं तो आपको बहुत ताकत लगानी पड़ती है अगर आपको मुझ पर विश्वास नहीं है तो आप पप्पू की पहले की फोटो देखें जिनमे आपको इसके चेहरे का केवल ढ़ांचा ही दिखेगा क्योंकि उन दिनों यह बहुत फिल्में देखा करता था, एक दिन में तीन–तीन शो भी। अब आप इसके चेहरे पर फर्क देख सकते हैं।

एक प्रेमी: *जब हम सामने देखते हैं और नाम दोहराते हैं उस समय हमें देखने पर ध्यान देना चाहिए या नाम दोहराने पर ध्यान देना चाहिए?*

बाबा जी: आप दोनों काम एक साथ कर सकते हैं।

एक प्रेमी: *क्या लेटकर अभ्यास किया जा सकता है?*

बाबा जी: देखो! जब हम बीमार हैं या बैठ न सकें तब हम लेटकर भी अभ्यास कर सकते हैं लेकिन ऐसा तभी करना चाहिए जब हमारा शरीर ठीक से काम न कर रहा हो। अगर आप स्वस्थ हैं तो आपको बैठकर अभ्यास करना चाहिए लेटकर अभ्यास करने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए क्योंकि यह मन की चाल है। मन चाहता है कि आप आलसी बन जाएं। मन आपको सलाह देता है कि लेटकर अभ्यास करने में क्या हर्ज है?

आपका काम सिमरन करना है। आप लेटकर भी सिमरन कर सकते हैं लेकिन जब आप लेटकर सिमरन करना शुरु कर देंगे तो आप कुछ ही समय सिमरन कर सकेंगे और आपको नींद आ जाएगी। इस तरह मन अपनी चाल चलकर आपसे अभ्यास का समय छीन लेगा।

मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप अपना अभ्यास इस तरह करें जैसे एक पहलवान अखाड़े में दूसरे पहलवान के साथ कुश्ती करने के लिए जाता है। उस समय दोनों पहलवान अपनी हार के बारे में नहीं सोचते, उन्हें आशा होती है कि वे सफल होंगे इसलिए वे अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं; हार या जीत तो बाद की बात है।

शुरू में दोनों पहलवानों में एक जैसा उत्साह होता है, वे एक-दूसरे को हराने की पूरी कोशिश करते हैं। इसी तरह जब आप अभ्यास में बैठें तो कभी यह न सोचें कि आप सफल नहीं होंगे। पहलवानों की तरह आपमें भी उत्साह और सफल होने की आशा होनी चाहिए। आपको अपनी पूरी ताकत अभ्यास में लगा देनी चाहिए। हमारा अखाड़ा दोनों आँखों के बीच

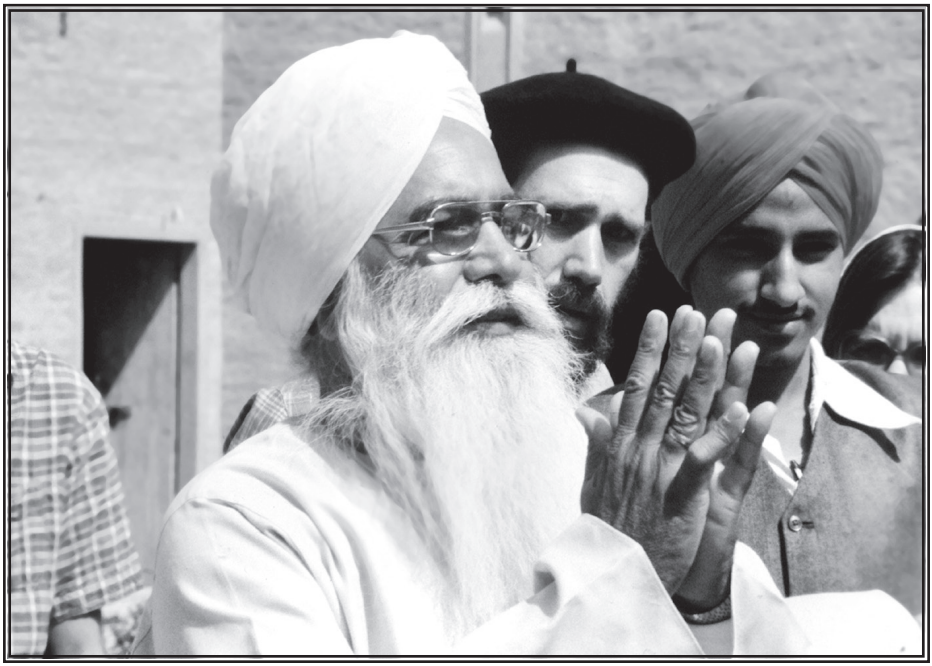

है जहाँ हमने अपने मन से लड़ना है। हमारा मन ही हमारा दुश्मन है, हमने मन के आगे कभी हार नहीं माननी।

आप कभी अकेले नहीं हैं। सतसंगी को कभी भी अपने आपको अकेला और बेबस नहीं समझना चाहिए। सतसंगी के सिर पर पूर्ण गुरु का हाथ होता है। नामदान के समय सतगुरु पावर शिष्य के अंदर अपना स्थान बना लेती है। सतगुरु हमेशा हम पर दया करते हैं और हमारी मदद करते हैं लेकिन हम कम से कम उस दया को प्राप्त करने का जरिया तो बनें।

सतगुरु नहीं चाहते कि उनके शिष्य इन्द्रियों के गुलाम बने रहें और पाँच डाकू उन्हें लूटते रहें। सतगुरु हमेशा चाहते हैं कि उनके शिष्य पाँच डाकुओं पर हावी रहें और उन्हें काबू करने में सफल हों।

***

6 जुलाई 1996

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों को अभ्यास में बिठाने से पहले

भक्ति और प्यार

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया अपनी भक्ति का दान दिया और भक्ति करने का मौका भी दिया। मैं सदा ही आपको याद करवाया करता हूँ कि परमात्मा की भक्ति उत्तम रतन है अगर संसार से साथ ले जाने वाला कोई तोशा है तो वह भक्ति का पदार्थ, भक्ति का धन ही है।

परमात्मा के दरबार में भक्ति ही सच्चे सुख और सच्ची इज्जत की दाता है। संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसे ले जाकर हम परमात्मा को खुश कर सकें या जो परमात्मा के पास न हो। परमात्मा जिस चीज से खुश होता है वह है **भक्ति और प्यार**।

हीरे, रतन मोल देकर खरीदे जा सकते हैं लेकिन भक्ति का अमोलक पदार्थ मोल देकर नहीं खरीदा जा सकता। हम इसे साधु–सन्तों से नम्रता के जरिए ही प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे शरीर के अंदर पाँच विरोधी ताकतें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार काम कर रही हैं। किसी महात्मा ने इन्हें चोर तो किसी महात्मा ने इन्हें डकैत कहा है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने बड़े–बड़े ऋषियों–मुनियों को गिरा दिया, बंदर की तरह नचाया। जब हम भक्ति प्राप्त करके भक्ति का पदार्थ इकट्ठा कर लेते हैं तो ये पाँचों विरोधी ताकते शान्त हो जाती हैं, ये हमारी मित्र बन जाती हैं।

सन्त–महात्मा संसार में परमात्मा के शरीक बनकर नहीं आते, परमात्मा के साथ बराबरी करने के लिए नहीं आते और न ही अपने आपको बड़ा साबित करने के लिए आते हैं।

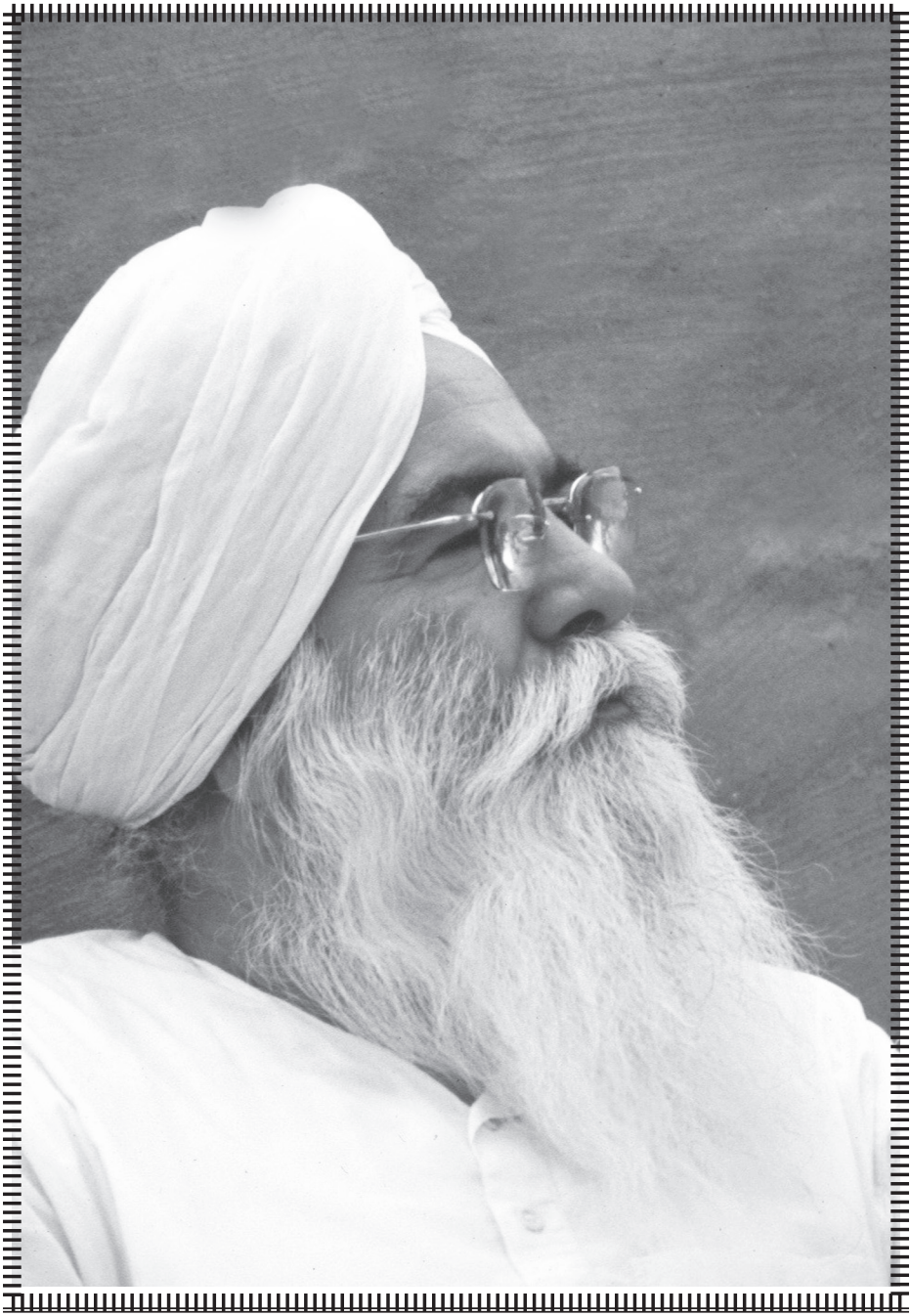

जिस तरह रिद्धियाँ–सिद्धियाँ दिखाने वाले लोग कहते हैं कि आओ! हम आपको लड़के देंगे, आपकी बीमारियाँ दूर करेंगे या आपको ऐसा मंत्र देंगे जिससे आपका रोजगार अच्छा चलने लगेगा, व्यापार अच्छा चलने लगेगा लेकिन सन्त ऐसे करिश्में नहीं दिखाते। सच तो यह है कि सन्त परमात्मा के प्यारे बच्चे बनकर रहते हैं। हमें पता है कि प्यारा बच्चा अपने पिता को खुश करके जो चाहे सो करवा सकता है।

सन्त–महात्मा दुनिया में आकर करामातें नहीं दिखाते। सन्तों की यही करामात है कि हे परमात्मा! मैंने जिन जीवों को तेरे नाम के बेड़े में चढ़ा दिया है अब तू इनसे कमाई करवा, इन्हें अपने चरणों में जगह दे। मैं तेरे आसरे इन्हें बेड़े में चढ़ा रहा हूँ, अब तू इन्हें बख्श दे। नामदेव जी कहते हैं:

कीता लोणन सोई करावन, दर फेर न कोई पाऐंदा।

सन्त परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि तू इन्हें बख्श दे। जिसे सतगुरु बख्शकर नाम दे देता है उसका दुनिया में आने–जाने का चक्कर खत्म हो जाता है।

महाराज जी कहा करते थे, ''एक ही शर्त रखी जाती है कि गुरु के ऊपर कभी अभाव न लाएं कि यह मेरे जैसा ही इंसान है।''

प्यारेयो! हमारे परमपिता कृपाल सिंह जी महाराज हमें जो काम बताकर गए हैं वह **भक्ति और प्यार** है। सुबह का मौका है हमने हर तरफ से ख्याल हटाकर परमात्मा की भक्ति करनी है। मन के साथ संघर्ष करना ही अभ्यास है। परमात्मा कृपाल ने आपको यह एक कीमती घंटा दिया है इस घंटे में हमने दुनिया के कारोबार की सोच को छोड़कर सिर्फ भक्ति के साथ जुड़ना है। आँखें बंद करके सिमरन करें।

***

धन्य अजायब

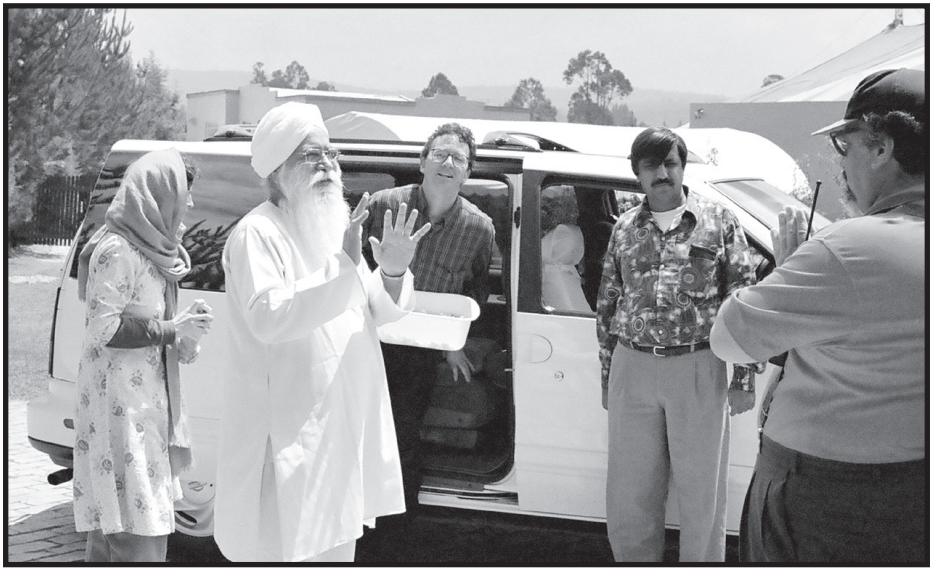

गुरु प्यारी साध–संगत,

बाबा जी की अपरम्पार दया से 15, 16 व 17 मई 2020 को दिल्ली में नीचे लिखे पते पर भजन–अभ्यास और सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई–बहनों से प्रार्थना है कि सतसंग में पहुँचकर बाबा जी की दया प्राप्त करें।

महाराजा अग्रसेन भवन

ज्वालाहेड़ी (रेड लाईट क्रासिंग) पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063

Phone - 98 10 21 21 38 , 98 18 20 19 99, 98 10 79 45 97

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम 03, 04 व 05 जुलाई 2020 का है

जयपुर में सतसंग का कार्यक्रम 31, जुलाई 01 व 02 अगस्त 2020 का है